सम्पादकीय
युगशक्ति गायत्री ही है युग परिवर्तन का सुनिश्चित आधार 2

बुद्ध पूर्णिमा
जन्मशताब्दी तक दो करोड़ नए घरों तक पहुँचने का संकल्प उभरा 4

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के यूरोप प्रवास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ 7

बुद्ध पूर्णिमा
गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान को मिली शानदार सफलता 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जून 2024

वर्ष : 36, अंक : 24
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 जून 2024
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

विचार विस्तार वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

चलते रहो, चलते रहो !

गति ही जीवन है, स्थिरता मृत्यु का पर्याय है।

निरन्तर आगे बढ़ते रहिये

जो आगे बढ़ता है, वह स्वस्थ, शक्तिमान और दीर्घजीवी रहता है, जो थककर एक ही स्थान पर हारकर बैठ जाता है, वह निर्बल, अशक्त और अल्पजीवी होता है, यह नियम प्रकृति में सर्वत्र दिखाई देता है। निरन्तर तीव्र गति से प्रवाहित कलकल करती सरिताओं का क्षिप्र जल जीवन और उल्लास से परिपूर्ण होता है। इसके विपरीत जिस जल में प्रवाह नहीं है, जो एक स्थान पर चारों ओर से घिरकर ठहर गया है, वह सड़कर दुर्गन्धमय हो उठता है। इसी सड़े जल को यदि गतिमान कर दिया जाए तो इसी में नवजीवन, शुद्धि एवं शक्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है।

गति ही जीवन है, स्थिरता मृत्यु का पर्याय है। प्रकृति का निरीक्षण कीजिये। अनन्त आकाश का भ्रमण करता हुआ सूर्य प्रातः से अपना गतिमान जीवन प्रारम्भ करता है और असंख्य लोकों को द्युतिमान करता हुआ सम्पूर्ण दिन गतिशील रहकर रात्रि में विश्राम करता है। उसका जीवन प्रतिदिन, प्रतिक्षण गति से परिपूर्ण रहता है। वह निरन्तर आगे बढ़ता है। गतिशील रहने के कारण उसके द्वारा विश्व का उदरपोषण होता है। सूर्य के एक दिन का विश्राम जीव-जन्तु जगत के लिये मृत्यु का संदेश बन सकता है।

जीव-जन्तुओं, पक्षियों को देखिये। सर्वत्र गति है। वे आलस्य में चूर कभी नहीं रहते, सतत उद्योगशील बने रहते हैं। गतिमान जीवन के कारण वे स्वास्थ्य, सौन्दर्य और स्फूर्ति का आनन्द प्राप्त करते हैं। यत्र-तत्र आकाश में विहार करने वाले पक्षी, जंगलों में चौकड़ी भरने वाले हिरण, गतिमान गायें, बकरियाँ, घोड़े, भेड़ और भैंस, वृक्षों पर उछल-कूद का जीवन व्यतीत करने वाले बन्दर, जल में नित्य गतिशील मछलियाँ, कछुए, मगर इत्यादि पूर्ण स्वस्थ, स्फूर्तियुक्त जीवन व्यतीत करते हैं। इनके जीवन में गति नवउल्लास की प्रतीक है। इसके विपरीत आलस्य में जड़-जीवों की तरह स्थिर पड़े रहने वाले जीव पंगु, अल्पायु और अस्वस्थ रहते हैं। निष्क्रिय जीवन व्यतीत करने वाले जीव जल्दी मृत्यु को प्राप्त होते हैं। उनके अवयव शिथिलता में पड़े रहने के कारण अपना कार्य यथोचित रीति से पूर्ण नहीं कर पाते।

प्राणिशास्त्र हमें सिखाता है कि जो अपनी शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक शक्तियों का निरन्तर उपयोग करता है, उस गति के कारण उसकी ये शक्तियाँ तथा निरन्तर सक्रिय रहने वाले अवयव पुष्ट होकर सुन्दर बन जाते हैं। काम न करने वाले अवयव सूखकर विनष्ट हो जाते हैं। निरन्तर कार्य से हमारा शरीर पुष्ट होकर आत्मा की ऊँचाई प्राप्त करता है।

माताजी के जीवन से सीखा

लेखक (पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी) के लिये अपनी माताजी का उदाहरण गतिमान जीवन का जाग्रत् उदाहरण है। वे बड़े तड़के पाँच बजे गृहस्थ के नाना कार्यों में दत्तचित्त हो संलग्न हो जाती हैं। ठण्ड या गरमी में शौचादि से निवृत्त होकर स्नान, ध्यान, पूजन, गीता पाठ के अतिरिक्त गृहस्थ के सभी कार्य ऐसे करती हैं जैसे किसी मशीन के द्वारा किये जा रहे हों। भैंस दुहने का कार्य हो या वस्त्र धोने का, पाकशाला के कार्य हों या सीने-पिरोने के, वे निरन्तर चलते रहते हैं। समस्त दिन कार्य से थककर वे रात्रि में मीठी नींद सोती हैं। उन्हें पता नहीं रहता कि कहाँ सो रही हैं? भोजन कम से कम, वस्त्र सबसे थोड़े, किन्तु कार्य सब से अधिक। उनसे कोई उनके उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य पूछे, तो वे उसे एक ही वाक्य में कहेंगी, "जो फिरैगो, सो चरैगो, बँधो भूखौ मरैगो।" अर्थात् जो चल-फिरकर गतिशील जीवन व्यतीत करेगा, उसे खुलकर भूख लगेगी, जो एक स्थान पर बँधा रहकर गतिविहीन जीवन व्यतीत करेगा, उसकी निष्क्रियता उसे मार डालेगी। इस कथन में उनके स्वस्थ जीवन का सम्पूर्ण मर्म खिंचकर आ जाता है। वे गति को ही जीवन का प्रधान लक्षण मानती हैं।

पैदल चलना जरूरी है

आधुनिक मानव के गिरे हुए स्वास्थ्य, कुरूपता अल्पायु का एक प्रधान कारण गतिविहीन, स्थिर जीवन है, उसे थोड़ी-थोड़ी दूर के लिये सवारी चाहिये। बस और ट्राम ने उससे यात्रा का आनन्द छीन लिया है। साइकिल (*इन दिनों स्कूटर, मोटर साइकिल, कार*) आधुनिक मानव का जीवन है, क्योंकि इसने आधुनिक युवक के पाँव जर्जरित, पंगु, शक्तिविहीन कर दिये हैं। वह साइकिल का ऐसा क्रीतदास हो गया है कि उसे थोड़ा भी चलना नहीं पड़ता। पाँवों का समुचित उपयोग न करने के कारण उसकी जीवनी शक्ति का ह्रास हो गया है।

हम मानते हैं कि कुछ शौकीन लोग टहलने जाते हैं। बड़ी आबादियों में ऐसे व्यक्ति दस प्रतिशत से अधिक नहीं हैं। चाहे आप कोई और व्यायाम करें अथवा नहीं, किन्तु टहलने का लोकप्रिय व्यायाम अवश्य करें। यदि यह नहीं तो आज से ही इधर-उधर जाने के लिये वाहन नहीं, पैरों का ही प्रयोग किया करें।

व्यस्त रहो, मस्त रहो

चलते रहो का तात्पर्य विस्तृत है। इसका एक अर्थ यह भी है कि कुछ-न-कुछ कार्य करते रहो, आलस्य में निष्क्रिय जीवन व्यतीत न करो। एक कार्य के पश्चात् दूसरा कोई नवीन कार्य आरम्भ करो। मानसिक कार्य के पश्चात् शारीरिक, शारीरिक श्रम के पश्चात् मानसिक कार्य; यह क्रम रखने से मनुष्य निरन्तर कार्यशीलता का जीवन व्यतीत कर सकता है।

आलस्य शत्रु है, सक्रियता जीवन-जागृति का लक्षण है। श्रम ही मनुष्य की सर्वोत्कृष्ट पूँजी है। आलसी व्यक्ति परिवार तथा समाज का शत्रु है। वह दूसरों के संचित श्रम पर निर्वाह करता है। ऐसे व्यक्ति से प्रत्येक परिवार को बचना चाहिये।

परिवार में जितने व्यक्ति हों, सभी सक्रिय रहें, अपना-अपना कार्य जागरूकता से सम्पन्न करें। मुखिया का कर्तव्य है कि बच्चों में प्रारम्भ से ही कार्य करने की आदतों का विकास करें। बच्चों में आलस्य उनके भावी जीवन के लिये हानिकारक है।

निरन्तर कार्य करने से वासनाएँ नियंत्रित रहती हैं। थक जाने से मनुष्य का मन घृणास्पद कृत्यों से बच जाता है। उसकी प्रवृत्तियाँ शुभ कार्यों की ओर अधिक लगती हैं। कार्यशीलता चरित्र को चमकाकर द्युतिमान कर देती है और स्वास्थ्य-सौंदर्य से परिपूर्ण कर देती है।

गायत्री महाशक्ति के धरा पर अवतरण दिवस पर सबके लिए सद्बुद्धि-उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के साथ मंगल कामना। गंगा दशहरा की भी शुभ कामनाएँ।

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा

चलते रहो, चलते रहो!

गतिशील जीवन का समग्र ज्ञान-विज्ञान एवं मर्म ऐतरेय ब्राह्मण के एक गीत में बड़ी सुन्दरता से व्यक्त किया गया है। इस गीत में भगवान इन्द्र ने हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित को सक्रिय जीवन व्यतीत करने का उपदेश इस प्रकार किया है-

"रोहित, जो श्रम से नहीं थका, ऐसे पुरुष को श्री नहीं मिलती। बैठे हुए आदमी को पाप धर दबाता है। इन्द्र उसका मित्र है जो बराबर चलता रहता है। इसलिये चलते रहो, चलते रहो!"

" जो पुरुष चलता है, उसकी आँखों में फूल-फूलते हैं। उसकी आत्मा भूषित होकर फल प्राप्त करती है। चलने वाले के पाप थककर सोये रहते हैं। इसलिये चलते रहो, चलते रहो!"

"बैठे हुए का सौभाग्य बैठा रहता है। खड़े होने वाले का सौभाग्य चल पड़ता है। इसलिये चलते रहो, चलते रहो!"

"सोने वाले का नाम कलि है। अंगड़ाई लेने वाला द्वापर है। उठकर खड़ा होने वाला त्रेता है और चलने वाला कृतयुगी होता है। इसलिये चलते रहो, चलते रहो!"

"चलता हुआ मनुष्य ही मधु पाता है। चलता हुआ ही स्वादिष्ट फल चखता है। सूर्य का परिश्रम देखो, जो नित्य चलता हुआ कभी आलस्य नहीं करता इसलिये चलते रहो!"

वाङ्मय 21 (अपरिमित संभावनाओं का आगार) पृष्ठ 2.12-14 से संकलित-सम्पादित)

एक ही प्रार्थना-"सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य"

युगशक्ति गायत्री ही है युग परिवर्तन का सुनिश्चित आधार

विचार क्रान्ति अभियान

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि वर्तमान समय की सबसे बड़ी माँग और युग परिवर्तन का आधार 'विचार क्रान्ति' है । मानवीय चिंतन में आई विकृति ही आज की समस्त समस्याओं की जड़ है। निकृष्ट चिंतन दुष्ट और भ्रष्ट आचरण को जन्म देता है और इसी से तमाम कष्ट, परेशानियाँ, समस्याएँ जन्म लेती हैं। मनुष्य की आवश्यकताएँ बहुत सीमित हैं, किन्तु अपेक्षाएँ इतनी बढ़ गई हैं कि उनकी पूर्ति कुबेर के खजाने से भी नहीं हो सकती। आज सुख-सुविधाओं के अंबार लगे हैं, लेकिन इंद्र जैसा वैभव भी लोगों को संतोष और आनन्द की अनुभूति नहीं करा पा रहा।

समय के साथ समाज में सभ्यता विकसित होती है, सुख-सुविधाएँ बढ़ती हैं। यह विकास तो होना ही चाहिए, लेकिन उसी अनुपात में मनुष्य की समझदारी भी बढ़नी चाहिए। घर में चाकू का होना अच्छी बात है, लेकिन उसका सदुपयोग कैसे किया जाए, यह समझदारी होना भी आवश्यक है। उसके अनगढ़ उपयोग से नुकसान की संभावना भी तो हैं। कोई नादान उसका प्रयोग किसी से बदला लेने और दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए करने लगे तो इससे दुर्घटना ही होगी।

यही बात आज वैश्विक स्तर पर भी दिखाई देती है। सुरक्षा और युद्धोन्माद पर विश्व के प्रायः सभी देशों का जितना धन खर्च हो रहा है, यदि वह विकास तथा जीवनोपयोगी कार्यों में लगा होता तो शायद इस धरती पर कोई भी व्यक्ति गरीब या अभावग्रस्त नजर नहीं आता। दूसरी ओर इन अस्त्र-शस्त्रों ने समाज में अराजकता, अत्याचार, भय का जो वातावरण तैयार किया है, उसे समझदारों की नासमझी नहीं तो क्या कहा जाये ?

इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता विचार क्रान्ति ही है। यदि मानवीय चिंतन-चरित्र को परिष्कृत और परिमार्जित किया जा सके तो व्यक्ति स्वतः ही अपने और अपने समाज के हितों को साधने लगेगा। सबके लिए अच्छी सोच रखने वाले समाज में भय, भेद, भ्रष्टाचार दूर होते जाएँगे। इसीलिए परम पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि इस युग का महाभारत अस्त्र-शस्त्रों से नहीं, विचारों से लड़ा जाएगा। मनुष्य के मन-मस्तिष्क में छाये दुश्चिंतन और दुर्विचारों को परास्त करने के लिए सद्विचारों की सेना खड़ी करनी होगी।

हम अंतरंग को बदलें

हवाई जहाज हवाई पट्टी पर ही उतरते हैं, ऊबड़खाबड़ जमीन पर नहीं। स्वास्थ्य लाभ की कामना हो तो स्वच्छ स्थान पर बैठकर ही आसन, प्राणायाम, ध्यान किया जाना चाहिए, दुर्गंधित और मैले-कुचैले स्थान पर तो बीमारियाँ ही जन्म लेती हैं। इसी प्रकार सच्चिंतन और सद्विचार भी स्वच्छ मन एवं पवित्र अंतःकरण में ही उभर सकते हैं।

आज समाज में उपदेशकों की भरमार है। हर व्यक्ति सोशल मीडिया पर ज्ञान परोस रहा है। फिर भी लोग नहीं बदल रहे, उनका विचार और व्यवहार नहीं बदल रहा, तो उसका सीधा-सा कारण एक ही है कि उन विचारों की पहुँच केवल बुद्धि तक ही हो पा रही है। जब तक व्यक्ति का अंतःकरण नहीं बदलता, तब तक वह व्यक्ति सुने-पढ़े सद्विचारों को जीवन में उतारने का साहस नहीं कर पाता।

जून 2024 की अखण्ड ज्योति पत्रिका के स्तंभ 'अपनों से अपनी बात' में अंतरंग और बहिरंग जीवन का बड़ा सुंदर विश्लेषण किया गया है। लिखा है- *"किसी भी समाज एवं राष्ट्र का विकास सभ्यता एवं संस्कृति के संगम-समन्वय की पृष्ठभूमि में होता है। संस्कृति मनुष्य की प्रकृति का निर्माण करती है, विचार एवं चिंतन को आधार देती है, वहीं सभ्यता से बाह्य जीवन शैली विकसित होती है। बहिरंग जीवन को शरीर, तो संस्कृति को प्राण की संज्ञा दी जा सकती है। व्यक्ति और समाज के उत्थान-पतन में इन दोनों की समन्वित भूमिका होती है।"*

इसी अंक में आगे आज के समय में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के पतन का कारण आज की भौतिकतावादी संस्कृति और उसके कारण उपजी आंतरिक विकृतियों को माना गया है। लिखा है-*"समस्याओं की जड़ बनी भौतिकवादी संस्कृति ने सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को बुरी तरह रौंदा है। वर्तमान मानवीय चिंतन का ढर्रा है-जैसे भी बने अधिकाधिक उपार्जन, उपभोग करो। स्पष्ट है वह भोगवादी नीति, अनीति, अपराध एवं अवांछनीयताओं का ही प्रोत्साहन देती है। प्रकारांतर से यह कहा जाए कि वर्तमान अनेकानेक भ्रष्ट आचरण एवं अपराधों में बड़ा योगदान भौतिकवादी संस्कृति का है तो यह अत्युक्ति नहीं होगी।*

अब आवश्यकता है कि इस स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन किया जाए। ऐसी संस्कृति का विकास किया जाए, जो पदार्थ को नहीं, चेतना को महत्त्व दे। जो वस्तुओं का उपयोग तो सोचे, पर उपभोग को तिरस्कृत करे। यह कार्य आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना से ही संभव होगा।"

विचार बदलें तो दुनिया बदले

व्यक्ति के विचार उसके अंतःकरण का प्रतिबिंब होते हैं। उनमें गजब की सृजनात्मक शक्ति होती है। विचार जिस दिशा में जाते हैं, व्यक्ति का जीवन भी उसी दिशा में प्रवाहित होने लगता है। ग्लास में आधा पानी देखकर जब एक व्यक्ति कहता है कि वह आधा भरा है तो उसके कथन में उसका आशावादी और सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। उसी ग्लास को देखकर जब दूसरा व्यक्ति कहता है कि वह आधा खाली है तो उसमें उस व्यक्ति के मन में अभाव तथा नकारात्मकता की परछाई नजर आती है। यदि इन व्यक्तियों का अध्ययन किया जाये तो इस सकारात्मकता और नकारात्मकता के प्रभाव उनके जीवन में भी दिखाई देंगे।

वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य में भी यह तथ्य परिलक्षित और प्रमाणित होता नजर आता है। हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री जी ने पत्रकारों को कई साक्षात्कार दिए। एक साक्षात्कार में उनसे पूछा गया कि आप परस्पर विरोधी देशों के साथ भी इतने अच्छे रिश्ते बनाने में कैसे सफल हो जाते हैं ?

माननीय प्रधानमंत्री जी ने जबाब दिया कि पहले हमारे देश की नीति होती थी कि इन प्रभावशाली देशों से इतनी दूरी बनाए रखी जाए कि किसी भी मित्र देश को आपत्ति न हो। अब हमने दृष्टिकोण बदला है। अब हम दूरी रखने का नहीं, नजदीकियों को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। अपने हितों को सर्वोपरि रखने साथ दूसरों के हितों का भी ध्यान रखते हुए हम सबके साथ निकटता स्थापित करने का वातावरण तैयार करने की योजना पर काम कर रहे हैं। परिणाम यह है कि हर देश को हममें अच्छा मित्र दिखाई देता है। हमारे दृष्टिकोण के बदलने से परस्पर विरोधी देशों में भी हमसे अधिक निकटता स्थापित करने की होड़ लगी है।

सर्वशक्तिमान गायत्री

भारत बदल रहा है। इस बदलते परिदृश्य, पूरे विश्व में बढ़ती भारत की साख और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के विस्तार के मूल में देश की राजनीति में आये वैचारिक परिवर्तन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सैद्धांतिक रूप से विचार बदल लेना सरल है, लेकिन उस बदले विचारों के आधार पर आचरण की दिशाधारा को मोड़ देना व्यक्ति के आत्मबल पर निर्भर होता है। यह आत्मबल अध्यात्म से, जीवन साधना से उपजता और विकसित होता है। आत्मबल से ही जीवन बदलते हैं, इसी आत्मबल से व्यक्ति में तूफानों से टकराने की और प्रवाह को चीरने की शक्ति आती है।

हमें युग को बदलने के लिए एक-दो व्यक्ति के नहीं, बल्कि पूरे समाज के चिंतन की दिशाधारा को बदलना होगा। यह परिवर्तन अध्यात्म के अवलम्बन और जीवन साधना से आत्मबल के उपार्जन के बिना संभव नहीं है। व्यक्तिगत जीवन के निकृष्ट चिंतन तथा सामाजिक जीवन की तमाम विकृतियों-बुराइयों से लड़ने के लिए हर व्यक्ति को विवेकशील और आत्मबल सम्पन्न होना होगा।

गायत्री प्राणदायिनी विद्या है। यह अकूत आत्मबल की जननी है। इसकी महिमा का गुणगान करते ऋषि, मुनि, वेद, पुराण, महामानव नहीं थकते।

अत्रि ऋषि कहते हैं- *"जो गायत्री तत्त्व को समझता है, उसके लिए संसार में कोई दुःख शेष नहीं रहता है। गंगा शरीर के पापों को दूर करती है, गायत्री से आत्मा निर्मल होती है।"*

महामना मदन मोहन मालवीय जी ने कहा है- *"ऋषियों ने जो अनेक अमूल्य रत्न हमें दिए हैं, उन सब में श्रेष्ठ गायत्री रत्न है।"*

रवीन्द्र नाथ टैगोर का कथन है- *"निर्विवाद रूप से गायत्री मंत्र राष्ट्र की आत्मा को जगाने वाला है।"*

गायत्री वह दिव्य ज्योति है, जिसके प्रकाश में जीवन भटक नहीं सकता। यह वह अलौकिक ऊर्जा है जो व्यक्ति को पतन से उबारकर उसे उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करती है। आज के समय में यदि बहुत मोटी तुलना की जाए तो इसे आत्मबल के जागरण का जनरेटर भी कहा जा सकता है। साहस के ईंधन और संकल्प के बटन से जब गायत्री उपासना आरंभ कर दी जाती है तो फिर यह जीवन को जगमगा देती है। गायत्री उपासना-साधना का क्रम नियमित रहे तो व्यक्ति को परमात्मा के दिव्य संरक्षण की अनुभूति होने लगती है, जीवन नित नई ऊँचाई प्राप्त करता जाता है।

ऋषि वशिष्ठ जी का मत है कि मंदगति और कुमार्गगामी भी गायत्री के प्रभाव से उच्च पद को प्राप्त करते हैं। लोकमान्य तिलक जी का कथन है कि गायत्री मंत्र में कुमार्ग छोड़ कर सुमार्ग पर चलाने की प्रेरणा विद्यमान है।

गायत्री उपासना से अंतःकरण शुद्ध होता है। अंतःकरण के परिष्कार-परिमार्जन से आत्मबल बढ़ता है, विचार बदलते हैं। विचारों के बदलते ही जीवन की दिशाधारा भी बदल जाती है। अनेक प्रकार के सांसारिक लाभ भी होते देखे गये हैं। बीमारी, कमजोरी, बेकारी, घाटा, गृह-कलह, मनोमालिन्य, मुकदमा, शत्रुओं का आक्रमण, दाम्पत्य सुख का अभाव, मस्तिष्क की निर्बलता, चित्त की अस्थिरता, सन्तान दुःख, कन्या के विवाह की कठिनाई, बुरे भविष्य की आशंका, परीक्षा में उत्तीर्ण न होने का भय, बुरी आदतों के बंधन, ऐसी अनेक कठिनाइयों से ग्रसित अगणित व्यक्तियों ने गायत्री आराधना करके अपने दुःखों से छुटकारा पाया है।

गायत्री सबके लिए है

वैसे तो गायत्री मंत्र का अपना विशिष्ट प्रभाव है, इसका जप सभी को करना चाहिए, लेकिन अपने धर्म-पंथ के कारण किसी को दुविधा हो तो परम पूज्य गुरुदेव ने समाज के हर वर्ग में इसके भाव को प्रतिष्ठित करने के लिए एक नई गायत्री की रचना की है, वह है-"सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य" की प्रार्थना। समाज के हर व्यक्ति को अपनी नियमित उपासना, पूजा पद्धति में इस भाव को अवश्य शामिल कर लेना चाहिए।

युगशक्ति गायत्री ही युग परिवर्तन का सुनिश्चित आधार है। गायत्री मंत्र सद्बुद्धि, सद्भाव जगाता है। किसी भी रूप में की गई गायत्री उपासना व्यक्ति के भाव और विचारों को बदल देती है। सबके लिए सद्बुद्धि और सबके लिए उज्ज्वल भविष्य का भाव जन-जन के अंतःकरण में प्रतिष्ठित हो जाये तो दुनिया की हर समस्या का समाधान होता चला जाएगा।

राष्ट्र आराधना करें

गायत्री मंत्र राष्ट्र की आराधना का मंत्र है। पड़ोस में गंदगी का ढेर हो, दुर्गंध उठ रही हो तो उसका दुष्प्रभाव आपके घर पर भी होगा, चाहे आप अपने घर को कितना भी साफ-सुथरा रख लें। उसी प्रकार यदि राष्ट्र पीड़ा, पतन, अभावों का दंश झेल रहा हो तो उसके हर नागरिक को उसके दुष्परिणामों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए राष्ट्र को समुन्नत करना हम सबका धर्म है, नैतिक कर्त्तव्य है।

आज समाज को ऐसे प्राणवान भगीरथों की आवश्यकता है, जो वाणी से ही नहीं, अपने पवित्र अंतःकरण, शुद्ध आचरण और व्यवहार से गंगा-गायत्री की दिव्य प्राणधाराओं को जन-जन में प्रतिष्ठित कर नवयुग के निर्माण में अहम भूमिका निभायें। यही वर्तमान समय की माँग है।

जरूरतमंदों के लिए जाग्रत् हुई भाव संवेदना

भीषण गरमी में राहगीरों के साथ पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने में भी जुटे दिया मुम्बई के कार्यकर्त्ता

मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया मुम्बई ने अपने प्रोजेक्ट संवेदना के अंतर्गत जरूरतमंदों के साथ-साथ पशु-पक्षियों तक को भीषण गर्मी से राहत दिलाने के प्रशंसनीय प्रयास किए। युवा कार्यकर्त्ताओं के कई समूहों ने सेवा भावी लोगों के साथ मिलकर जगह-जगह प्याऊ लगाई, जहाँ पेय जल, छाछ, शर्बत आदि की व्यवस्था की गई थी। श्री जतिन दवे ने बताया कि उनकी इन सेवाओं

से चिलचिलाती धूप में सेवाएँ दे रहे पुलिसकर्मी, गैरेज वाले, ऑटो-रिक्शा चालक, टैक्सी चालक आदि को बड़ी राहत मिली।

श्री दवे ने बताया कि उनकी टीम के द्वारा अनेक स्थानों पर जल के पात्र- मिट्टी के बर्तन, घड़े आदि रखे जा रहे हैं। उन्होंने कई आवासीय सोसाइटियों में जाकर लोगों से अपनी सोसाइटी में कम से कम पाँच इसी तरह के पात्र लगाने और उनमें स्वच्छ जल भरते रहने का आह्वान भी किया। इस कार्य में लोगों का प्रशंसनीय सहयोग मिल रहा है।

56वाँ रक्तदान शिविर : 208 यूनिट रक्तदान हुआ

जमशेदपुर। झारखण्ड

जमशेदपुर में गायत्री परिवार के नवयुगदल युवा प्रकोष्ठ, प्रज्ञा महिला मंडल ने काशीडीह स्थित डीएसएम स्कूल फॉर एक्सीलेंस के सहयोग से 56वाँ रक्तदान शिविर आयोजित किया। शिविर 26 मई को डीएसएम स्कूल फॉर एक्सीलेंस में आयोजित हुआ, जिसमें कुल 208 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। शिविर के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री चन्देश्वर खाँ ने गायत्री परिवार के युवाओं द्वारा चलाये जा रहे सामाजिक कार्यों की प्रशंसा की। डीएसएम स्कूल फॉर एक्सीलेंस की ओर से श्री सौगंध सिंह ने सभी रक्तदाताओं

जमशेदपुर में रक्तदान करती गायत्री परिवार की बहिनें

और शिविर में सक्रिय गायत्री परिवार के युवाओं का आभार व्यक्त किया।

शिविर से पूर्व यज्ञ किया गया, जिसके मुख्य यजमान विद्यालय संचालक श्री दिलीप सिंह एवं उनकी सहधर्मिणी श्रीमती सरोज सिंह थे। शिविर संयोजन में श्री संजीव सिन्हा, श्री पुष्पेन्द्र कुमार, श्री जितेन्द्र कुमार सचान का सहयोग रहा।

नेत्र एवं सर्वरोग निदान शिविर

प्राची तीर्थ, सोमनाथ। गुजरात

अखिल विश्व गायत्री परिवार और रामभुबेन उकाभाई चुड़ासमा सेवा समिति ने श्री कोली समाज भवन प्राची में निःशुल्क सद्गुरु सुपर मेगा नेत्र निदान शिविर, दंत यज्ञ एवं सामान्य रोग जाँच शिविर का आयोजन किया। आरंभ में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता पत्रकार जादवभाई चुडासमा ने अपने विचार रखे। उन्होंने उपस्थित सभी लोगों से विश्व कल्याण के लिए और सबके उत्थान के लिए गायत्री उपासना एवं प्रार्थना करने का आह्वान किया। परम पूज्य गुरुदेव का फोटो और साहित्य भेंट कर शिविर के दानदाता श्री कानाभाई सोलंकी और उनके परिवार का सम्मान किया गया।

इस शिविर में डॉ. अल्केश भाई ने कुल 110 रोगियों की जाँच की, जिनमें से 36 मरीजों को मोतियाबिंद सर्जरी के लिए राजकोट ले जाया गया। डॉ. नयनाबेन रावलिया अक्षर डेंटल क्लिनिक वेरावल ने 15 मरीजों की जाँच कर उनका इलाज किया। भागीरथ सिंह राठौड़ माधव क्लिनिक घांटिया फाटक में 40 से अधिक मरीजों की जाँच की गई और उन्हें निःशुल्क दवाइयाँ दी गईं। हाड़ वैध रविराज बर्डिया तलाला और हमीरभाई ने 30 मरीजों की सेवा की। आयोजकों की ओर से सभी के लिए जलपान और भोजन प्रसाद की सुंदर व्यवस्था भी की गई थी।

अत्यंत लोकप्रिय चिकित्सा शिविर के आयोजक और लाभार्थीगण

इस शिविर को सफल बनाने के लिए कानाभाई सोलंकी (बोसान), नाथाभाई सोलंकी (थरेली), नारणभाई, रोहितभाई दरबार (अमरपुर), राहुलभाई राठौड़ (बोसान), वलाभाई (कंतला) और दिवालीबेन (प्राची), सोनीबेन, गोरखमघी बेन चुडासमा और भुवनेश्वरी बेन चुडासमा का विशेष योगदान रहा।

गृहस्थ जीवन की आदर्श प्रेरणाओं के साथ परिणय सूत्र बंधन में बँधे वाल्मीकि समाज के 32 युगल

खिलचीपुर, राजगढ़। मध्य प्रदेश

वाल्मीकि समाज का द्वितीय सामूहिक विवाह सम्मेलन नेशनल हाईवे मेला ग्राउंड खिलचीपुर में गायत्री परिवार द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस समारोह में परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की आदर्श दाम्पत्य जीवन की प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए 32 युगल परिणय सूत्र में बँधे। उन्हें आशीर्वाद देने पूर्व ऊर्जा मंत्री माननीय राजा साहब श्रीमंत प्रियव्रत सिंह खिची व अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर के व्यवस्थापक पं. कन्हैयालाल शर्मा ने बताया कि इस समारोह में समाज को रूढ़ियों और कुरीतियों से मुक्ति दिलाने के प्रभावशाली प्रयास हुए। विवाह संस्कार में आये सैकड़ों अतिथियों को नशीले पदार्थों के घातक दुष्परिणामों की जानकारी दी गई। विवाह संस्कार परिव्राजक सुनील कुमार शर्मा, श्री नारायण प्रसाद भारद्वाज, परिव्राजक श्री राधेश्याम जी शक्तिपीठ छापीहेड़ा, परिव्राजक श्री कैलाश चंद्र शर्मा शक्तिपीठ खिलचीपुर तथा श्री अजय कुमार शर्मा की टोली ने संपन्न कराया।

भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री धर्म विवर्धन नाथ, ऊना। हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री धर्म विवर्धन नाथ, सेवानिवृत प्रधानाचार्य अपनी सांसारिक यात्रा पूरी करके दिनांक 15 अप्रैल 2024 को ईश चेतना में विलीन हो गए। वे 84 वर्ष के थे। उन्होंने अपने क्षेत्र में मिशन की गतिविधियों को बढ़ाने तथा संगठन को मजबूत करने में अभूतपूर्व योगदान दिया और लोगों का खूब प्यार पाया। वे अंतिम समय तक गुरुकार्यों में संलग्न रहे।

वृक्षारोपण

बिहार और प. बंगाल में वर्षों से चल रहा है साप्ताहिक रविवासरीय अभियान

कोलकाता। प. बंगाल

अखिल विश्व गायत्री परिवार कोलकाता की टीटागढ़ बैरकपुर शाखा एवं श्रीश्री शम्भुनाथ मंदिर परिचालन समिति बैरकपुर के सदस्यों के द्वारा दिनांक 2 अक्टूबर 2016 से लगातार प्रति रविवार को वृक्षारोपण किया जाता है। यह शाखाएँ बिना कोई बाहरी अनुदान लिए आपसी सहयोग से वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण जागरूकता अभियान चला रही हैं। समाचार लिखे जाने तक शाखा ने 400 सप्ताह तक सतत वृक्षारोपण का भागीरथी लक्ष्य प्राप्त कर लिया था। शाखा ने 12 मई को 398वें सप्ताह में रहाड़ा, वॉर्ड नं 2, (विवेकानंद स्टेडियम के नजदीक) खरदाह, कोलकाता में वृक्षारोपण कार्य सम्पन्न किया।

वृक्षारोपण अभियान के लिए समर्पित टीटागढ़-बैरकपुर की टीम

टीटागढ़ बैरकपुर की सिमरी बक्सर (बिहार) में स्थित एक अन्य सम्बद्ध शाखा द्वारा भी पिछले 316 सप्ताह से साप्ताहिक रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है। बिहार के ही नवादा जिले के नारदीगंज में गायत्री परिवार की बाल संस्कार शाला द्वारा पिछले 203 सप्ताह से साप्ताहिक वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है।

हर रविवार होता है प्राणवान

चला रहे हैं 'मेरा घर मेरा वृक्ष' अभियान

मोडासा। गुजरात

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप मोडासा ने वृक्षारोपण अभियान को गति देने के लिए 'मेरा घर मेरा वृक्ष' अभियान चलाकर लोगों से हर रविवार को 'प्राणवान संडे' बनाने का आह्वान किया है। दिनांक 26 मई को युवा दल ने न केवल नए पेड़ लगाए, बल्कि पहले से लगाया गया हर पेड़ स्वस्थ रहे, इसके लिए उनकी देखभाल की।

जी.पी.वाई.जी. मोडासा के कार्यकर्त्ता इस अभियान को जन-जन में लोकप्रिय बना रहे हैं। उनका मानना है कि पेड़ और जीवन का अन्योन्याश्रित संबंध है। हर व्यक्ति एक-एक पेड़ लगाकर अपने घर-परिसर को हराभरा रखे तो पूरी धरती स्वस्थ हो सकती है। पर्यावरण संरक्षण का यही स्थाई उपाय है।

पूर्व में लगाए पेड़ों की देखभाल करते युग निर्माणी युवा

प्रवेश प्रारंभ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रत्यायित एवं आईएसओ 9001 : 2015 एवं 45001 : 2018 द्वारा प्रमाणित

ऑनलाइन आवेदन : www.dsvv.ac.in @dsvvofficial

परीक्षा केन्द्र

भोपाल (म.प्र) हरिद्वार (उत्तराखण्ड) कोलकाता (प.बंगाल) लखनऊ (उ.प्र) नोएडा (उ.प्र.) नागपुर (महाराष्ट्र) पटना (बिहार) राजनांदगाँव (छ.ग.)

बीएड कार्यक्रम के लिए मात्र देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार ही परीक्षा केन्द्र है।

स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम 4 वर्ष

बी.एससी.	गणित (ऑनर्स)
बी.एससी.	योग विज्ञान (ऑनर्स)
बी.एससी.	इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (ऑनर्स)
बी.वोक.	3डी एनीमेशन एण्ड वीएफएक्स (ऑनर्स)
बी.सी.ए.	बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (ऑनर्स)
बी.ए.	संस्कृत (ऑनर्स)
बी.ए.	हिन्दी (ऑनर्स)
बी.ए.	अंग्रेजी (ऑनर्स)
बी.ए.	इतिहास (ऑनर्स)
बी.ए.	मनोविज्ञान (ऑनर्स)
बी.ए.	संगीत-गायन (ऑनर्स)
बी.ए.	तबला-मृदंग (ऑनर्स)
बी.बी.ए.	टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेण्ट (ऑनर्स)
बी.आर.एस.	बैचलर ऑफ रूरल स्टडीज (ऑनर्स)
बी.ए.	पत्रकारिता एवं जनसंचार (ऑनर्स)
बी.एड.	बैचलर ऑफ एजुकेशन 2 वर्ष

पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम 1 वर्ष

- पी.जी. डिप्लोमा-मानव चेतना, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा (केवल विदेशी छात्रों हेतु)
- पी.जी. डिप्लोमा-धर्म विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श
- पी.जी. डिप्लोमा-गाइडेन्स एण्ड कॉउंसलिंग

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम 2 वर्ष

एम.ए./एम.एससी.	नैदानिक मनोविज्ञान
एम.ए./एम.एससी.	मानव चेतना एवं योग विज्ञान
एम.एससी.	योग चिकित्सा
एम.सी.ए.	मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (डाटा साइंस)
एम.बी.ए.	टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेण्ट
एम.ए.	शिक्षा
एम.ए.	पत्रकारिता एवं जनसंपर्क
एम.ए.	इतिहास एवं भारतीय संस्कृति
एम.ए.	संस्कृत
एम.ए.	हिन्दी
एम.ए.	संगीत-गायन
एम.ए.	संगीत-तबला, पखावज
एम.ए.	दर्शनशास्त्र
एम.ए.	हिन्दू स्टडीज़

आवेदन फॉर्म हेतु

- ऑनलाइन आवेदन-http://www.dsvv.ac.in (₹ 1000/-)
- ऑफलाइन आवेदन-**आवेदक** कैम्पस से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रत्येक आवेदक एक ही पाठ्यक्रम के लिए आवेदन कर सकता है। **(बीएड के अतिरिक्त)**
- प्रवेश प्रक्रिया एवं अन्य विस्तृत जानकारियाँ विश्वविद्यालय की विवरणिका एवं वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

Apply ONLINE www.dsvv.ac.in Scan for Application

कुलसचिव : देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411 (उत्तराखण्ड)
फोन : (01334) 261367 (Ext.: 5407, 5524) **ईमेल : admissions@dsvv.ac.in**
वेब : www.dsvv.ac.in **मोबाइल :** +91-9258360763, 9258369877, 9258369612, 9720107192

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

बुद्ध पूर्णिमा : मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़ में श्रद्धा, सक्रियता, सफलता की प्रचंड लहर

जन्मशताब्दी वर्ष तक 2 करोड़ नये घरों तक पहुँचने का संकल्प उभरा

भोपाल में यज्ञ करती बहिनों की टोली

देवास के कारागार में यज्ञ करते बंदीगण और स्टाफ

थनोद, दुर्ग के एक विद्यालय में बच्चों ने यज्ञ किया

महासमुंद में यज्ञ करता एक परिवार

रायपुर में यज्ञ करती साध्वी विभा मुनि

देव परिवारों के निर्माण का सशक्त-सुनियोजित अभियान

15 हजार

भोपाल। मध्य प्रदेश

इस वर्ष गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के अंतर्गत भोपाल नगर में पंद्रह हजार नये घरों में यज्ञ करवाने का लक्ष्य रखा गया था। इस आध्यात्मिक अनुष्ठान में प्रदेश के धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन, मंडल, अधिकांश वर्गों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान मध्य प्रदेश की टीम के सदस्य सर्वश्री सदानंद अंबेकर, रमेश नागर, अमर धाकड़, अशोक सक्सेना, डॉ. दयानंद, श्रवण गीते, रामप्रकाश गुप्ता, शिवनारायण राजपूत, कैलाश सक्सेना, श्याम शर्मा, ओ.पी. विश्वकर्मा तथा महिला मंडल की प्रभारी मधु श्रीवास्तव एवं उनकी टीम ने पूरे अभियान को व्यवस्थित और सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। प्रज्ञा पीठ बरखेड़ा, 11 चेतना केंद्र के प्रभारी तथा बैरसिया तहसील के सभी भाई-बहिनों ने मिलकर विभिन्न व्यवस्थाएँ सँभालीं। हर कार्यकर्त्ता अपने-अपने मोहल्ले में यज्ञ अभियान को गति देने के लिए बहुत उत्साहित और सक्रिय रहा।

देव परिवार निर्माण

बुद्ध पूर्णिमा के यज्ञ अभियान में शक्तिपीठ के व्यवस्थापक श्री रामचंद्र गायकवाड की विशेष भूमिका रही। वे यजमानों के सतत संपर्क में रहे। आगे भी देव परिवार निर्माण के लक्ष्य को पूरा करने के लिए शक्तिपीठ ने यजमानों से संपर्क बनाए रखने का निर्णय लिया है, जिससे उन्हें गायत्री परिवार की अन्य गतिविधियों-पर्वों एवं संस्कारों से जोड़ा जा सके।

जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल ने बताया कि इस वर्ष प्रदेश में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान को व्यापक विस्तार देने में मातृशक्ति श्रद्धा संवर्धन शक्ति कलश यात्राओं का विशेष योगदान रहा। यह यात्राएँ विगत जनवरी से लेकर मई माह तक चलीं, प्रदेश के हर जिले एवं हर ब्लॉक में हर पंचायत स्तर तक पहुँचीं। इनके माध्यम से हुए जनसंपर्क के कारण हर जिले में हजारों नए घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुए।

भोपाल के परिवारों ने साझा किए अनुभव

- हमारे यहाँ पहली बार ऐसा कर्मकांड हुआ है।
- इससे हमें नई ऊर्जा एवं एक नया विचार मिला है।
- हमने आज एक पौधा लगाया और कोई भी नशा न करने का संकल्प भी लिया है।
- अब हम अपने देश-समाज के लिये सहयोग अवश्य करेंगे।

18 हजार

उज्जैन। मध्य प्रदेश

बुद्ध पूर्णिमा के दिन उज्जैन जिले के लगभग 18 हजार घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराए गए। जिले की हर तहसील में गजब का उत्साह था। खाचरौद के 4800, नागदा के 4500, उज्जैन ग्रामीण के 2000, उज्जैन शहरी के 1500, तराना माकड़ौन के 1500, बड़नगर के 100 और महिदपुर -झारड़ा के 400 घरों में यज्ञ हुए। घर-घर गायत्री उपासना से वातावरण को सकारात्मक एवं ऊर्जावान बनाने, सामाजिक कुरीतियों को मिटाने, वैचारिक प्रदूषण दूर करने और राष्ट्र के उत्थान के लिए सक्रियता अपनाने की प्रेरणाएँ दी गईं।

"इदं गायत्र्यै, इदं न मम' के उद्घोष से गूँज उठे गाँव

देवास। मध्य प्रदेश

देवास जिले का गाँव-गाँव बुद्ध पूर्णिमा के दिन ''इदं गायत्र्यै, इदं न मम' के उद्घोष से गुंजायमान हो उठा। गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के अंतर्गत 8223 घरों में यज्ञ सम्पन्न कराये गये। लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ राष्ट्रीय स्तर के सामूहिक यज्ञ अभियान में भागीदारी की, साथ ही पड़ोसी, सगे-संबंधी, मित्रों को भी प्रेरित किया। देवास तहसील में 3158, हाटपिपल्या में 1600, कन्नौद में 250, बागली में 300, सोनकच्छ में 505, खातेगाँव में 1300, सतवास में 200, टोंक खुर्द में 10, उदयनगर में 50 घरों में यज्ञ संपन्न हुए ।

कारागार में : गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के अंतर्गत जिला कारागार में भी यज्ञ का आयोजन किया गया था। बंदियों ने बुराइयाँ छोड़ने और अच्छाइयों को अपनाने की देवदक्षिणा दी। जेलर श्री अनिल दुबे ने गायत्री परिवार के इस आयोजन की सराहना की।

अभियान को सफलता तक पहुँचाने में दुर्गा दीदी और प्रमोद निहाले के साथ जिले के सभी तहसील प्रभारियों गिरीश गुरु, डॉ. राजेंद्र व्यास, हरिप्रसाद पांडे, राजेंद्र शर्मा पुष्कर लाल गुप्ता, आशीष गुप्ता, सुरेश भारद्वाज, हरिराम जीराती, रवि नायक, रमेशचंद मेहता सहित वरिष्ठ जनों में रमेश नागर, उर्मिला सोनी, नीति श्रीवास्तव, वंदना पाटीदार, पुरुषोत्तम परमार, जय प्रकाश नाड़ेकर और अन्य परिजनों का सराहनीय योगदान रहा ।

कुछ ध्यानाकर्षक बिन्दु

- इस अभियान ने अखण्ड दीप और परम वंदनीया माताजी के शताब्दी वर्ष-2026 तक देश में दो करोड़ नए घरों में मिशन को पहुँचाने का संकल्प जगाया है।
- अनेक शाखाएँ पहले ही गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान का साप्ताहिक या मासिक क्रम अपना रही हैं। इस वर्ष की सफलता ने अधिकांश क्षेत्र की शाखाओं में ऐसी ही सक्रियता अपनाने की उमंग जगाई है।
- समस्त अभियान देव परिवार निर्माण के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ। जो परिवार मिशन से जुड़े, उनके साथ सतत संपर्क बनाए रखकर उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों से जोड़ा जा रहा है। उन परिवारों को मिशन की पत्रिकाओं का सदस्य बनाया जा रहा है।

यज्ञ संचालन के विविध रूप

- पुरोहितों ने घर-घर पहुँचकर यज्ञ कराए।
- पूर्व में यज्ञ प्रशिक्षण की व्यवस्थाएँ बनाई गईं।
- मिशन से जुड़े लाखों कार्यकर्त्ताओं ने स्वत: यज्ञ करते हुए इस महान वैश्विक आध्यात्मिक अनुष्ठान में भागीदारी की।
- शांतिकुञ्ज से हुए ऑनलाइन यज्ञ संचालन से जुड़े।
- मोबाइल पंडित के सहारे भी हजारों लोगों ने यज्ञ किया।
- परिजनों ने अपनी सुविधा के अनुरूप दीपयज्ञ, लघु यज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ करते हुए भी वैश्विक अभियान में भागीदारी की।

मध्य प्रदेश के हर ब्लॉक, हर नगर तक पहुँचा यज्ञ अभियान

बुद्ध पूर्णिमा के दिन जिला कारागार बड़वानी में दीपयज्ञ का आयोजन

तेंदूखेड़ा में बच्चों ने लिए मंत्र लेखन के संकल्प

हर ब्लॉक में रही सक्रियता

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

अलीराजपुर जिले में बुद्ध पूर्णिमा के दिन कुल 2430 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुए। जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा ने बताया कि जिले के प्रत्येक ब्लॉक-अलीराजपुर, नानपुर, जोबट, बोरी, उदयगढ़, खट्टाली, आम्बुआ, भाबरा, बरझर, कठ्ठीवाड़ा, सोडवा और छकतला में कार्यकर्त्ताओं ने अपनी मिशन निष्ठा का सुंदर परिचय देते हुए युग देवता का संदेश घर-घर पहुँचाया। अलीराजपुर में सर्वाधिक 828 घरों में और जोबट में 450 घरों में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

वृक्षारोपण एवं मंत्र लेखन के संकल्प लिए

तेंदूखेड़ा, नरसिंहपुर। म.प्र.

तेंदूखेड़ा शाखा द्वारा चलाए गए गृहे-गृहे यज्ञ अभियान में चिल्का गाँव में अनेक लोगों ने यज्ञ किया। यज्ञ में भाग लेने वाले सभी लोगों ने एक-एक पौधा लगाने एवं मंत्र लेखन साधना करने का संकल्प लिया।

25 पंचायत और 15 वॉर्ड में यज्ञ हुए

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

23 मई-वैशाख पूर्णिमा को हटा तहसील की 25 पंचायतों एवं नगर के 15 वॉर्ड में, बटियागढ़ ब्लॉक की छः पंचायतों, पटेरा ब्लॉक की आठ पंचायतों में कुल 1522 घरों में गायत्री महामंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र से यज्ञ भगवान को आहुतियाँ समर्पित की गईं। तहसील समन्वयक पं दिनेश दुबे ने लोगों को गायत्री परिवार के यज्ञ अभियान के उद्देश्य बताए।

क्षेत्र में नई मान्यता बनी

खिलचीपुर, ब्यावरा राजगढ़। मध्य प्रदेश

बुद्ध पूर्णिमा के दिन नगर खिलचीपुर के 1008 घरों में यज्ञ हुआ। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री कन्हैयालाल शर्मा जी ने बताया कि गायत्री परिवार के गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के प्रभाव से नगर में अब यह मान्यता बनती जा रही है कि चाहे कोई कहे या न कहे, बुद्ध पूर्णिमा के दिन घर में यज्ञ किया ही जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी सहित अनेक जनप्रतिनिधियों के आवास, सामाजिक संगठनों-मंदिरों में हुए शानदार यज्ञीय कार्यक्रम

रायपुर। छत्तीसगढ़

रायपुर जिले में 11 हजार से अधिक परिवारों में यज्ञ सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार रायपुर के मीडिया प्रभारी श्री प्रज्ञा प्रकाश निगम व अमित डोये ने बताया कि प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के निवास पर भी यज्ञ हुआ। उन्होंने सपरिवार यज्ञ में सम्मिलित होकर प्रदेशवासियों के सुखी एवं समृद्ध जीवन की कामना की।

रायपुर में यज्ञ करते मुख्यमंत्री दम्पति

गायत्री परिवार छत्तीसगढ़ की जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा एवं जिला समन्वयक श्री लच्छूराम निषाद ने बताया कि इन यज्ञों के माध्यम से सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय के संकल्प के साथ जन-जन को राष्ट्र निर्माण के महान आध्यात्मिक अनुष्ठान में बढ़-चढ़कर भागीदारी करने की प्रेरणा दी गई। लोगों को पर्यावरण संरक्षण, वैचारिक उत्कृष्टता, सामाजिक विकृतियों के उन्मूलन और सत्प्रवृत्ति संवर्धन की प्रेरणाएँ दी गईं।

रायपुर में अनेक जनप्रतिनिधियों के निवास पर यज्ञ हुआ। विभिन्न समाजसेवी संगठनों व मंदिरों का भी प्रशंसनीय सहयोग मिला। साध्वी विभामुनि-संस्थापिका श्रीधाम आध्यात्मिक सेवा संस्थान गीतांजली नगर, जागृति मण्डल (आर.एस.एस.) पंडरी, विश्व हिन्दू परिषद् पंडरी, बोरियाखुर्द श्रीराम मंदिर समिति व शिव मंदिर समिति, जगन्नाथ मंदिर अवंती विहार, राम मंदिर तेलीबांधा, महामाया मंदिर, काली मंदिर आकाशवाणी चौक एवं अनेक मंदिरों में यज्ञ संपन्न हुआ।

थनोद, दुर्ग। छत्तीसगढ़

बुद्ध पूर्णिमा पर शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल थनोद में यज्ञ किया गया। इसमें शाला के प्राचार्य श्री अनिल गजपाल, शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। श्रीमती अनीता साव एवं डॉ. पी.एल. साव ने यज्ञ का कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया। उन्होंने यज्ञ से स्वास्थ्य रक्षा, पर्यावरण शुद्धि, आत्म परिष्कार आदि लाभों का ज्ञान-विज्ञान समझाया। विद्यार्थियों को जीवन में उत्साह, आत्मविश्वास और सकारात्मकता बढ़ाने के लिए नियमित गायत्री उपासना करने की प्रेरणा दी, संकल्प कराए।

महासमुंद। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ महासमुंद के निर्देशन में सेरकेल प्रज्ञा मंडल एवं झलप इकाई द्वारा लखनपुर में एक साथ 40 घरों में गायत्री महायज्ञ संपन्न किया गया। यज्ञ संचालन हेतु पटेवा, पचरी, चिरको, अछोला, महासमुंद एवं आसपास के परिजन उपस्थित हुए। शाम के समय गायत्री प्रज्ञा पीठ आछोला की टीम द्वारा दीप यज्ञ का संचालन किया गया।

उल्लेखनीय है कि इन दिनों गायत्री परिवार द्वारा महासमुंद जिले में सभी विकासखंडों में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान चलाया जा रहा है।

हमें ईश्वर का सच्चा साक्षात्कार तभी होता है, जब हम उसके सामने अपनी याचनाएँ लेकर नहीं, किन्तु अपनी भेंट लेकर जाते हैं। - रवीन्द्रनाथ टैगोर

बुद्ध पूर्णिमा : गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान से ऋषि संस्कृति का विस्तार

पूर्वोत्तर में मिली शानदार सफलता

जीरो। अरुणाचल प्रदेश

सुदूर क्षेत्र अरुणाचल प्रदेश में गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्ताओं ने गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान को सफल बनाने के लिए अत्यंत प्रशंसनीय कार्य किया और शानदार सफलता पाई। गायत्री शक्तिपीठ जीरो के परिव्राजक श्री सुधाकर गुप्त ने बताया कि उनके दल ने लगातार 9 दिनों तक जनसंपर्क अभियान चलाकर 150 परिवारों को इस अभियान में भागीदारी के लिए सहमत किया।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन शक्तिपीठ की टोली ने प्रातः 10 बजे से रात्रि 8.30 बजे तक 20 घरों में यज्ञ कराए, सायंकाल 3 स्थानों पर दीपयज्ञ कर समग्र अभियान की पूर्णाहुति की। 70 घरों में परिजनों ने स्वयं यज्ञ किया। अनेक मुस्लिम व ईसाई माता-बहिनों ने भी अपनी-अपनी तरह से प्रार्थनाएँ कर इस वैश्विक अभियान में भाग लिया। गायत्री परिवार की कार्यकर्त्ता बहिनों ने बारिश की परवाह किए बगैर जिस श्रद्धा-निष्ठा का परिचय दिया, वह प्रशंसनीय है।

ऋषि संस्कृति के विस्तार का संदेश

चंद्रपुर। महाराष्ट्र

जिला चंद्रपुर में अखिल विश्व गायत्री परिवार ब्रह्मपुरी द्वारा 608 घरों में यज्ञ संपन्न कराया गया। इनमें 8 बड़े यज्ञ हुए और 600 सूक्ष्म यज्ञ किए गए। कार्यकर्त्ताओं ने गाँव-गाँव संपर्क किया, लोगों को बुद्ध पूर्णिमा के विशेष अभियान का महत्त्व समझाया। सभी परिवारों को सूक्ष्म यज्ञ के किट निःशुल्क प्रदान किए गए।

चंद्रपुर जिले में यज्ञ के माध्यम से पर्यावरण शुद्धि का संदेश प्रमुख रूप से दिया गया था। लोगों को वातावरण में व्याप्त विषाणुओं को समाप्त करने की यज्ञ की क्षमता पर हुए शोधकार्यों की जानकारी दी गई। उन्हें बताया गया कि ऋषियों द्वारा विकसित इस प्राचीन परम्परा से घर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और शारीरिक-मानसिक दृष्टि से स्वास्थ्य लाभ होता है। यज्ञ हमारी संस्कृति द्वारा दिया गया एक अमूल्य उपहार है। सभी को बेहतर जीवन के लिए यज्ञ को जीवन का अनिवार्य अंग बनाना चाहिए।

इस अभियान से हजारों लोगों में भक्तिभाव का संचार हुआ। लोगों का कहना था कि यद्यपि यज्ञ छोटा था, लेकिन हमें जो ऊर्जा मिली, उससे हम बहुत खुश हैं।

गायत्री परिवार ब्रम्हपुरी ने इस अभियान को पूरे वर्ष पूरी तहसील में चलाने और अगले वर्ष में एक हजार से अधिक घरों में यज्ञ कराने का संकल्प लिया।

गाँवों में आई नवजागृति

सूरत। गुजरात

सूरत में युवा संगठन 'दिया', डांग जिला गायत्री परिवार एवं गायत्री शक्तिपीठों के प्रयासों से बड़ी बहुचराजी, डभोली रोड एवं मोरभागल, रांदेर रोड में बुद्ध पूर्णिमा के दिन विशाल यज्ञीय कार्यक्रम सम्पन्न हुए। डांग जिले के पाँच गाँव-पीपल दहद, अमथवा, मोहपाड़ा, भोंडविहिर और गौहान में कुल 220 नए घरों में यज्ञ हुए।

बहिनों की 45 टोलियों ने यह कार्यक्रम सम्पन्न कराए। उन्हें प्रत्येक घर के लिए यज्ञ सामग्री, मंत्र लेखन पुस्तिका, एक बॉल पेन और बहिनों के लिए एक पीली साड़ी पहले से उपलब्ध कराई गई थी।

सार्वजनिक दीप यज्ञ

बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर गाँव पीपल दहद स्थित हनुमान मंदिर में दीप यज्ञ किया गया। दिया, सूरत के प्रतिनिधि श्री सुधीर पटेल के अनुसार 150 ग्रामवासियों ने इसमें भाग लिया, सांस्कृतिक कार्यक्रमों से भी युग संदेश दिया गया।

15 दिनों तक सघन संपर्क किया

अमरेली। गुजरात

गायत्री ज्ञान मंदिर ट्रस्ट अमरेली ने अपने शहर में घर-घर यज्ञ अभियान को सफल बनाने के लिए लगातार 15 दिनों तक सघन जनसंपर्क अभियान चलाया और उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। सभी ट्रस्टी और गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं के समर्पण भाव के परिणामस्वरूप बुद्ध पूर्णिमा के दिन अमरेली नगर के 410 घरों में यज्ञ सम्पन्न कराए गए। इन देव परिवारों को जनसंपर्क अभियान के साथ ही हवन सामग्री, संक्षिप्त यज्ञ अनुष्ठान विधि पुस्तक, देव परिवार संकल्प पत्र सहित समस्त सामग्री गायत्री परिवार द्वारा उपलब्ध करा दी गई थी।

10 हजार लोगों तक पहुँचा युग संदेश

बूँदी। राजस्थान

बूँदी जिले के विभिन्न गाँवों, तहसीलों में 772 घरों में गायत्री यज्ञ कराए गए। मुख्य ट्रस्टी श्री सुरेश कुमार विजयवर्गीय ने बताया कि यज्ञ अभियान प्रातः 7 बजे से 12 बजे दोपहर तक चला। घर-घर हुए यज्ञों में राष्ट्र को समर्थ, शक्तिशाली एवं प्राणवान बनाये रखने के लिए गायत्री महामंत्र के साथ आहुतियाँ दी गईं। 10 हजार से अधिक लोगों ने घर, परिवार और राष्ट्र की सुख-शांति, समृद्धि और पर्यावरण की शुद्धि के लिए प्रार्थनाएँ कीं। समस्त कार्यकर्त्ता, महिला मण्डल और युवा मण्डल के साथ इस महाअभियान की सफलता में महिला मंडल प्रभारी उषा शर्मा का विशेष योगदान रहा।

यज्ञ से नकारात्मकता हटती है

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

बुद्ध पूर्णिमा के दिन चित्तौड़गढ़ शहर और पूरे जिले में 250 से अधिक घरों में गायत्री यज्ञ हुए। इन यज्ञों में वातावरण शोधन, स्वास्थ्य संवर्धन, प्राणीमात्र के कल्याण के लिए प्रार्थनाएँ की गईं। श्री बद्री लाल माली ने बताया कि इनमें भाग लेने वाले हजारों लोगों को बताया गया कि यज्ञ से सभी प्रकार की नकारात्मकता का शमन होता है और दैवी अनुदान मिलते हैं। लोगों को प्रतिदिन यज्ञभाव से जुड़े रहने के लिए यज्ञ के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। गायत्री शक्तिपीठ के प्रबंध ट्रस्टी श्री रमेश पुरोहित सहित सैकड़ों वरिष्ठ-कनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने घर-घर गायत्री और यज्ञ का संदेश पहुँचाने में अपना नैष्ठिक योगदान दिया।

जीरो, अरुणाचल प्रदेश में घर-घर यज्ञ हुआ

चित्तौड़गढ़

सूरत

चंद्रपुर

अमरेली

कामठी, नागपुर

बूँदी

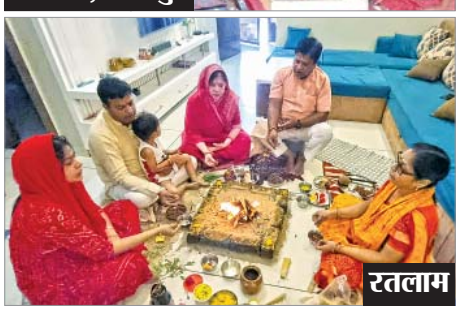

रतलाम

साप्ताहिक अभियान बनाने का उत्साह

राठ, हमीरपुर। उत्तर प्रदेश

बुद्ध पूर्णिमा के सुअवसर पर राठ नगर एवं राठ क्षेत्र के सभी ग्रामों में सहस्त्रों परिवारों ने गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ सम्पन्न किया। गायत्री शक्तिपीठ, गायत्री प्रज्ञापीठों सहित कतिपय मंदिरों में भी यज्ञीय कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये।

अभियान संयोजक डॉ. एल. एल. त्रिपाठी ने बताया कि जनपद के सातों ब्लॉकों में लगभग 2400 नए-पुराने परिजनों के परिवारों में यज्ञ एवं सामूहिक गायत्री उपासना के कार्यक्रम किये गए। जिला समन्वयक पं. चन्द्रशेखर मिश्र ने कहा कि विगत चार वर्षों से चल रहे इस आध्यात्मिक प्रयोग से वातावरण में दिव्यता का संचार हो रहा है और लोगों का चिंतन, चरित्र बदल रहा है। महिला मंडल प्रमुख श्रीमती उषा व्यास, तहसील समन्वयक श्री भोजराज एवं ब्लॉक समन्वयक श्री शंकर प्रताप सहित अनेक गणमान्यों ने अभियान की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इस कार्यक्रम को साप्ताहिक अभियान बना लेने का विनम्र अनुरोध किया।

कांगड़ा में बही युगऋषि के विचारों की गंगा

कांगड़ा। हिमाचल प्रदेश

सत्संग ज्ञान का सरोवर है। सत्संग ही बहती गंगा और सत्संग ही भगवान से मिलने का सशक्त माध्यम है।

24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शशिकांत सिंह ने जिला कांगड़ा के गढ़ नोरा में आयोजित 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के अवसर पर प्रज्ञा पुराण कथा का महत्त्व बताते हुए यह विचार व्यक्त किए। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के माध्यम से श्रद्धालुओं को आत्मविभोर करते हुए मानव जाति पर आए संकट और दुःखों का कारण अज्ञान बताया। उन्होंने कहा कि युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित प्रज्ञा पुराण कथा वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान करती है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि प्रज्ञा पुराण कथा ईश्वर, धर्म, भक्ति, अध्यात्म, संस्कार, संस्कृति आदि हर क्षेत्र में मानवीय चिंतन को परिष्कृत कर समाज को प्रगतिशील परम्पराओं से जोड़ती है, मानवता के उत्थान का पथ प्रशस्त करती है।

गढ़ नोरा में सम्पन्न 24 कुण्डीय यज्ञ की भव्य कलश यात्रा

गायत्री महायज्ञ का आयोजन 17 मई तक हुआ। इसका शुभारंभ भव्य कलश यात्रा के साथ हुआ, जिसमें सैंकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। प्रतिदिन हजारों लोगों ने सबके लिए सद्बुद्धि की प्रार्थना तथा राष्ट्र के नवनिर्माण की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ अर्पित कीं। श्री राजीव सूद के अनुसार लोगों में इस आध्यात्मिक उत्सव में भागीदारी के लिए अभूतपूर्व उत्साह दिखाई दिया। गायत्री प्रज्ञा मण्डल धीरा ने शरबत और ठंडे पानी की छबीलें लगाकर गर्मी में श्रद्धालुओं को राहत देने का कार्य किया।

परिव्राजक प्रशिक्षण एवं समयदान हेतु आमंत्रण

हमारे ऋषियों ने अपने कठोर त्याग एवं उत्सर्ग से भारतीय संस्कृति को 'सप्तद्वीपा वसुंधरा' बनाया है। परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा वर्तमान समय में आरंभ की गई परिव्राजक परम्परा उसी महान पुण्यदायी ऋषि परम्परा का अभिनव संस्करण है। गायत्री परिवार के हजारों परिजन इस सेवा-साधना को अपनाकर आत्मकल्याण और लोकमंगल का अक्षय पुण्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं, लेकिन सतयुग की वापसी और युग परिवर्तन जैसे महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अभी ऐसे लाखों परिव्राजकों की आवश्यकता है।

जिनके पास परिवार की जिम्मेदारियाँ सीमित हैं और वे समयदान करने में समर्थ हैं, ऐसे तेजस्वी, प्रखर एवं भावनाशील परिजनों को युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज का भावभरा आमंत्रण है। जो लोग सेवा निवृत्ति हो चुके हैं, ऐसे लोगों को तो देश के विभिन्न प्रज्ञा संस्थानों में अपना कुछ समय देने के लिए आगे आकर अपना युगधर्म निभाना ही चाहिए। इससे उनकी योग्यता और कार्यदक्षता में भी निखार आएगा, गुरुकार्यों को करने से आत्मसंतोष बढ़ जाएगा। परम वंदनीया माताजी ने कहा था, "देव संस्कृति के विस्तार के लिए भावनाशीलों की आवश्यकता है। बेटा! आपके ब्राह्मणोचित निर्वाह में कभी कमी नहीं आएगी, इच्छाएँ एवं कामनाएँ तो रावण और सिकंदर की भी पूरी नहीं हुईं।"

जिनके पास न्यूनतम चार माह का समय हो और पूर्व में शान्तिकुञ्ज में 9 दिवसीय संजीवनी साधना सत्र एवं एक मासीय युगशिल्पी सत्र कर चुके हों, वे पूर्वानुमति लेकर किसी भी माह की 28 या 29 तारीख में शान्तिकुञ्ज पधारें। अगले माह की एक तारीख से उनका एक मासीय प्रशिक्षण आरंभ होगा। प्रशिक्षण के उपरांत शेष 3 माह या उससे अधिक समय के लिए उनकी विभिन्न प्रज्ञा संस्थानों में नियुक्ति की जाएगी। अनुरोध है कि समाज और संस्कृति की सेवा के लिए साहसी कदम बढ़ायें। पूर्वानुमति प्राप्त करने अथवा किसी भी प्रकार की पूछताछ के लिए संपर्क कीजिए-

शिविर विभाग, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
मो. 9258369747, 7498962656

भगवान एक है, पर मनुष्य की भाव-शक्ति में उसे अनेक रूप देने की क्षमता है। - पंचतंत्र

बंदियों के समग्र उत्कर्ष हेतु चलाए जा रहे हैं विविध पाठ्यक्रम

आत्म परिष्कार युग पुरोहित प्रशिक्षण सत्र

छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश शासन के जेल विभाग द्वारा कारागारों को आत्म सुधार केंद्र के रूप में विकसित करने के प्रयासों के अंतर्गत जिला कारागार छिंदवाड़ा में 40 दिवसीय युग पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का अयोजन हुआ। इसमें लगभग 50 बंदी भाई भाग ले रहे हैं। उन्हें यज्ञ कर्मकाण्ड एवं ढपली का प्रशिक्षण तथा बौद्धिक कक्षाओं में नशा उन्मूलन सहित विविध प्रेरणाएँ दी जा रही हैं।

40 दिवसीय शिविर

कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 25 मई 2024 को जिला कारागार अधीक्षक श्री यजुवेंद्र वाघमारे जी के मागदर्शन में हुआ। जिला कारा उप अधीक्षक ज्ञानांशु भारतीय, गायत्री परिवार छिंदवाड़ा के जिला समन्वयक श्री दिनेश देशमुख सहित अशोक कावड़े, रमेश शिवात्री, सुधाकर अदलक, भगवान दास साहू, विनोद माहोरे आदि अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता इस अवसर पर उपस्थित थे। इस प्रशिक्षण सत्र के प्रशिक्षक श्री अरुण पराड़कर, पुरुषोत्तम बंदेवार ने मंच संचालन किया।

महिला बंदियों को बना रहे हैं स्वावलम्बी, शिक्षित और संस्कारवान

अलवर। राजस्थान

गायत्री परिवार की अलवर शाखा और इनर व्हील क्लब अलवर ने अपने संयुक्त प्रयासों से स्थानीय कारागार में महिला बंदियों को स्वावलम्बी, सद्गुणी, संस्कारवान बनाने के लिए नई पहल की है। उनके द्वारा कारागार में दो सिलाई मशीन, सिलाई सीखने के लिए किट और कई मीटर कपड़े प्रदान किए गए हैं। सिलाई सिखाने के लिए एक महिला शिक्षिका नियुक्त की गई है, जो सप्ताह में दो दिन सिलाई सिखाने जाती है।

गायत्री परिवार की तरफ से बंदी बहिनों का मनोबल बढ़ाने तथा उनके आध्यात्मिक विकास के लिए भी पहल की गई। कारागार को जीवनोपयोगी एवं प्रेरणाप्रद पुस्तकों के हैंगर प्रदान किए गए हैं। सभी बहिनों को गायत्री मंत्र लेखन की पुस्तक भी दी गई हैं।

यह कार्य कारा अधीक्षक और जेलर महोदय की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। उन्हें तथा पूरे स्टाफ को युग साहित्य भेंट किया गया। इस अवसर पर उपस्थित इनर व्हील क्लब की अध्यक्षा श्रीमती अलका मित्तल, डॉ. कुमकुम खंडेलवाल, श्रीमती कुमकुम गुप्ता तथा गायत्री परिवार की मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी डॉ. सरोज गुप्ता, आशा तिवारी, अक्षिता तिवारी ने बंदी बहिनों को बिस्कुट, फल और मिठाईयाँ भी प्रदान कीं।

24 विद्यालयों में वेद स्थापना एवं कन्या कौशल शिविर

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

सुल्तानपुर में हुए प्रांतीय कन्या कौशल शिविर के अनुयाज के क्रम में सुल्तानपुर शाखा ने विद्यालयों में कन्या कौशल शिविरों की शृंखला चला रखी है। अब तक 24 विद्यालयों में कन्या कौशल शिविरों का आयोजन हो चुका है। इनके माध्यम से कन्याओं को आत्मरक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, सेवा, भारतीय संस्कृति के बारे में प्रशिक्षित किया गया। सभी 24 विद्यालयों में वेदों की स्थापना की गई।

जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह ने बताया कि उनका लक्ष्य 108 विद्यालयों में वेद स्थापना एवं एक दिवसीय कन्या कौशल शिविरों के आयोजन का है। सुल्तानपुर शाखा से प्रभाकर सक्सेना, राकेश सिंह, हनुमान सिंह, सच्चिदानन्द सिंह, सोनू, अभिषेक सिंह आदि इस लक्ष्य को यथाशीघ्र प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम कर रहे हैं।

सद्ग्रंथ स्थापना कराती प्रतिभागी कन्याएँ

पाँच दिवसीय आवासीय शिविर

40 कन्याओं ने भाग लिया

जावरा, रतलाम। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जावरा में मई के तीसरे सप्ताह में पाँच दिवसीय आवासीय कन्या कौशल शिविर का आयोजन हुआ। 40 कन्याओं ने विविध सत्रों में भाग लेते हुए इस शिविर का लाभ उठाया। शिविर संयोजक श्री संजय गुप्ता ने बताया कि इन युवतियों को विश्व की महान नारियों का जीवन दर्शन बताया गया, स्वास्थ्य परिचर्चा हुई। जीवन जीने की कला, गायत्री का वैज्ञानिक आधार, भारतीय संस्कृति, संस्कार जैसे अनेक विषयों की जानकारी इस शिविर में बालिकाओं को दी गई। संगीत, कर्मकाण्ड आदि सिखाया गया। प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री विवेक चौधरी ने बालिकाओं को गायत्री परिवार की विस्तृत जानकारी देते हुए आत्मोत्थान एवं राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए इन कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी करने की प्रेरणा दी।

कड़ी, महेसाणा। गुजरात

गायत्री शक्तिपीठ में 12 मई के दिन युवा व्यक्तित्व परिष्कार शिविर का आयोजन हुआ। लगभग 60 युवाओं ने इसमें भागीदारी करते हुए आत्मशक्तियों को जगाने, आत्मविश्वास बढ़ाने तथा सद्गुणों को अपनाने की प्रेरणाएँ हृदयंगम कीं। युवाओं को सृजनात्मक गतिविधियों में भाग लेने तथा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर जीवन को सदैव उत्कृष्टता की ओर ले जाने की प्रेरणा दी। तमाम सामाजिक एवं व्यक्तिगत कुरीतियों-विकृतियों की ओर पावर पॉइण्ट प्रेजेण्टेशन के माध्यम से ध्यानाकर्षण कर उनसे बचने की सलाह दी गई।

विचार क्रान्ति अभियान

इनग्राम माइक्रो में युग साहित्य पुस्तकालय की स्थापना

कर्मचारियों को सकारात्मक, सृजनात्मक और प्रगतिशील सोच के लिए प्रेरित कर रहे हैं युगऋषि के विचार

मुम्बई। महाराष्ट्र

युगऋषि के साहित्य के प्रत्येक शब्द परिवर्तनकारी हैं। इन विचारों में दुनिया भर के व्यक्तियों और परिवारों के जीवन को बदलने की क्षमता है। दिया मुम्बई के राजेश शेट्टी और उनकी बहिन सुचिता इन्हें जन-जन तक पहुँचाने में जुटे हैं। वे विशेष अवसरों पर लोगों को युग साहित्य भेंट करते हैं। घरों और कॉर्पोरेट स्थानों में पुस्तकालयों की स्थापना करा रहे हैं।

राजेश जी इन दिनों इनग्राम माइक्रो इंडिया में सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यालय में 'युगऋषि पुस्तकालय' की स्थापना की। उन्होंने अपनी कम्पनी की मुख्य मानव संसाधन अधिकारी सोनिया कुलकर्णी को यह साहित्य भेंट किया। इसके माध्यम से वे अपने सहकर्मियों को सकारात्मक, सृजनात्मक, प्रगतिशील विचारों को अपनाने की प्रेरणा दे रहे हैं।

ग्रीष्मकालीन अवकाश में बच्चों को दी नैतिक शिक्षाएँ

दस दिवसीय बाल संस्कार शिविर

बड़वानी में चल रहा शिविर और बच्चों को प्रोत्साहित करते श्री महेन्द्र भावसार

बड़वानी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बड़वानी द्वारा कक्षा 8 से 12 तक के छात्र/छात्राओं के लिए संस्कार संवर्धन शिविर का आयोजन किया गया। इसमें प्रतिदिन प्राणायाम, खेल कूद, चित्रकला तथा तरह-तरह की नैतिक शिक्षाओं का पाठ पढ़ाया गया। शिविर में प्रतिदिन 150 छात्र, छात्राओं ने भागीदारी की।

शिविर का शुभारंभ मुख्य ट्रस्टी डॉ. प्रकाश यादव द्वारा दीप प्रज्वलन, देवपूजन से हुआ। जिला समन्वयक श्री महेंद्र भावसार ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि संस्कार खरीदे नहीं जाते, अपनी लगन से निरंतर अभ्यास करते हुए प्राप्त किए जाते हैं। शिविर प्रभारी ममता तोमर, रेखा पुरोहित ने शिविर का संचालन किया। समापन सत्र में स्मृति चिह्न भेंट कर शिविरार्थियों का उत्साह वर्धन किया गया। ममता तोमर द्वारा मातृ-पितृ पूजन कराया गया, जिसके अंतर्गत बच्चों ने अपने-अपने माता-पिता को फूल मालाएँ पहनाईं और उनसे आशीर्वाद लिये।

बच्चों ने माता-पिता का पूजन कर उन्हें फूल मालाएँ पहनाईं, उनसे आशीर्वाद लिये।

प्रेरणा-प्रशिक्षण के विषय

- जीवन कैसे जिएँ?
- मोबाइल वरदान है या अभिशाप?
- घर-वातावरण में सुंदरता कैसे बढ़े?
- सादा जीवन उच्च विचार
- जीवन में माता-पिता का महत्त्व
- समय प्रबंधन
- लर्न बाय फन

जल संकट का भविष्य

शीघ्र ही हम देखेंगे

बच्चों को दी सृजनात्मक दिशाधारा

बागबाहरा में चल रहा व्यक्तित्व विकास शिविर

बागबाहरा, महासमुंद। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ बागबाहरा में 20 मई से 22 मई 2024 की तिथियों में तीन दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में 110 शिविरार्थी भाई-बहिनों की उपस्थिति रही। शिविर संचालन बिलासपुर से श्री सुरेंद्र गुप्ता के नेतृत्व में आई सुश्री रोमा साहू, योगेश साहू, श्रीमती योगेश्वरी थवाईत, दुर्गेश साहू की टोली ने किया।

मुख्य अतिथि श्री तेजनाथ ताडे-रेंजर, प्रभात उपाध्याय, ललित मेश्राम, नरेंद्र नायक, दुबे जी तथा शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी श्री विश्वनाथ अग्रवाल, श्री होरीलाल सोनी पूर्व प्राचार्य एवं अन्य वरिष्ठों ने दीप प्रज्वलन-देवपूजन कर शिविर का शुभारंभ किया। तीन दिवसीय कार्यक्रमों में योगाभ्यास, जीवन साधना, नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, बाल संस्कार शालाओं के संचालन जैसे समसामयिक विषयों पर पावर पॉइंट प्रोजेक्टर के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली प्रशिक्षण दिया गया।

बच्चों का ग्रीष्मकालीन सत्र 'उत्कर्ष-2024'

जैसलमेर। राजस्थान

गायत्री परिवार की युवा इकाई दिया द्वारा आदर्श विद्या मंदिर सुल्ताना में समर कैम्प 'उत्कर्ष-2024' का आयोजन किया गया। मई के तृतीय सप्ताह में आयोजित इस शिविर में सैकड़ों बच्चों ने इसमें भाग लेते हुए बहुआयामी शिक्षाएँ प्राप्त कीं। उन्हें योग, यज्ञ, खेलकूद, विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं बौद्धिक कक्षाओं के माध्यम से स्वावलम्बन, सहकारिता, नेतृत्व, राष्ट्रप्रेम, व्यक्तित्व निर्माण, विपरीत परिस्थितियों में आत्मविश्वास संबंधी शिक्षाएँ दी गईं।

कमल सिंह, सुमेर सिंह एवं महिपाल सिंह ने योगाभ्यास कराया। लूण सिंह कनोई, नरपतलाल शर्मा ने यज्ञ के माध्यम से शिक्षाएँ दीं। मुकुट शर्मा ने रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ बताईं। माया बोरावट व किरण भाटी ने संगीत, अभिनय कला, लेखन, भाषण इत्यादि संबंधी मार्गदर्शन दिया। इसी प्रकार अनेक युवा प्रशिक्षकों ने बच्चों को नैतिक शिक्षाएँ दीं, गुणवान बनने के सूत्र सिखाए।

नैमिषारण्य में गुजरात की बहिनों ने किया युगऋषि के विचारों का प्रचार

विचार क्रान्ति के लिए निकली बहिनों की टोली

नैमिषारण्य, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

श्रीराम साधना आरण्यक नैमिष धाम के ठीक सामने गेस्ट हाउस में गुजरात की बहिनों के एक समूह द्वारा भागवत कथा का आयोजन किया गया। ये बहिनें गायत्री परिवार की नैष्ठिक सदस्य हैं, अतः उन्होंने अपने युगधर्म का भी बड़ी निष्ठा के साथ पालन किया। वे प्रतिदिन श्रीराम आरण्यक की परिक्रमा करती थीं। अक्षय तृतीया के दिन उन्होंने सूर्योदय वेला में ज्ञानयज्ञ प्रभातफेरी निकाली और इसके माध्यम से अपनी पावन गुरुसत्ता का ज्ञान प्रसाद जन-जन तक पहुँचाया।

कठिनाइयों की सृष्टि करना बुद्धिमानी नहीं है, उन पर विजय प्राप्त करना पुरुषार्थी मनुष्य का काम है। – प्रेमचंद

देव संस्कृति विवि. के प्रति कुलपति जी के यूरोप प्रवास की कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के माननीय प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी भारतीय संस्कृति के वैश्विक विस्तार के अभियान के अंतर्गत 3 मई से 21 मई 2024 तक ब्रिटेन, लिथुआनिया, इटली और लातविया के प्रवास पर रहे। पूरा प्रवास अनेक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। प्रवास के आरंभिक चरण के समाचार गत अंक (1 जून 2024) के पृष्ठ 7 पर प्रकाशित हुए हैं। प्रवास के उत्तरार्ध के समाचार यहाँ प्रस्तुत हैं।

रीगा के एयरोनॉटिकल स्कूल में गायत्री यज्ञ

रीगा। लातविया

लातविया की राजधानी रीगा एक प्रतिष्ठित औद्योगिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक एवं वित्तीय केंद्र माना जाता है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने वहाँ के एयरोनॉटिकल स्कूल में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया। उल्लेखनीय है कि यह एयरोनॉटिकल स्कूल विश्व प्रसिद्ध है। यह पूरे विश्व में ड्रोन्स के निर्माण में अग्रणी माना जाता है।

गायत्री यज्ञ में संस्थान के लगभग समस्त विशिष्ट लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया और गायत्री एवं यज्ञ के दर्शन को समझा। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें बताया कि गायत्री उपासना और यज्ञ मानवीय चेतना के उत्थान में कैसे और कितना बड़ा योगदान देते हैं। इस दर्शन के साथ यज्ञ में भागीदारी कर सभी बहुत प्रभावित हुए।

अनेक लोगों ने नियमित गायत्री उपासना करने का शुभ संकल्प लिया।

रीगा के एयरोनॉटिकल स्कूल में गायत्री यज्ञ कराते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

लातवियन अकादमी ऑफ कल्चर के साथ अनुबंध हुआ

रीगा : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी लातविया में संस्कृति के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त संस्थान लातवियन अकादमी ऑफ कल्चर, रीगा में पहुँचे। वहाँ संस्थान के नवनिर्वाचित कुलपति श्री दाविस सीमानिस से उनकी मुलाकात हुई।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने श्री दाविस को वर्तमान युग में प.पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों की प्रासंगिकता और आवश्यकता से अवगत कराया, उनके व्यक्तित्व का परिचय दिया तथा गायत्री परिवार द्वारा वैश्विक स्तर पर उनके विचारों को फैलाने के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। विस्तृत चर्चा के उपरांत देसंविवि और लातवियन अकादमी ऑफ कल्चर के साथ परस्पर सहयोग के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर हुए।

श्री दाविस सीमानिस लातविया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित फिल्मकार भी हैं। वे अनेकों फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय जी कुलपति श्री दाविस सीमानिस को युग साहित्य भेंट करते हुए

जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के प्रयाज हेतु संगोष्ठी

लंदन : ब्रिटेन और यूरोप प्रवास के अंतिम पड़ाव में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी लंदन पहुँचे। उन्होंने विश्व की आर्थिक राजधानी माने जाने वाले लंदन शहर के ब्रेंटन सभागार में कार्यकर्त्ताओं को संबोधित किया। अखण्ड दीप की स्थापना और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-2026 के प्रयाज कार्यक्रमों के संबंध में 'हमारे अंतर्मन की ज्योति कैसे प्रज्वलित करें?' विषय से अपने आत्मीय स्वजनों का मार्गदर्शन किया।

आद. डॉ. चिन्मय जी लंदन में कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन करते हुए

कार्यक्रम बहुत ही उत्साहवर्धक और उपलब्धिपूर्ण रहा। परिजनों ने संगठित होकर सुनियोजित ढंग से युग निर्माण आन्दोलन को जन-जन तक पहुँचाने के संकल्प लिए, योजनाएँ बनाईं।

भारतीय उच्चायुक्त श्री विक्रम कुमार दोरईस्वामी से हुई चर्चा

लंदन शहर में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने ब्रिटेन में भारतीय उच्चायुक्त श्री विक्रम कुमार दोरईस्वामी से भेंट की। इस मुलाकात में अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा वैश्विक स्तर पर भारतीय अध्यात्म और संस्कृति के विस्तार की प्रस्तावित योजनाओं पर चर्चा हुई। माननीय उच्चायुक्त को जीवन विद्या के आलोक केंद्र-गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय भ्रमण हेतु भारत आने का आमंत्रण भी दिया।

भारतीय उच्चायुक्त को युग साहित्य भेंट करते आद. डॉ. चिन्मय जी

विशिष्ट गणमान्यों से विचार विनिमय

लंदन में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति जी की विश्व में शान्ति एवं सुलह के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिष्ठित एक विशाल केन्द्र रोज़ कैसल फाउण्डेशन की माननीया अध्यक्ष प्रोफेसर सारा स्नाइडर तथा बर्मिंघम विश्वविद्यालय के सम्मानित प्रोफेसर निकोलस एडम्स से शिष्टाचार भेंट हुई। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें देव संस्कृति विश्वविद्यालय में स्थित दक्षिण एशियाई शांति एवं सुलह संस्थान की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की कॉमनवेल्थ के उप महासचिव श्री लुइस फ्रांसेस्की से भी मुलाकात हुई। इस मुलाकात में विश्वहित के अनेक विषयों पर परस्पर विचार विनिमय हुआ। उन्हें विश्व मानवता के लिए परम कल्याणकारी परम पूज्य गुरुदेव के सूत्रों से अवगत कराया।

प्रो. एडम्स तथा प्रो. सारा स्नाइडर

श्री लुइस फ्रांसेस्की

देव संस्कृति विवि पधारे सम्मानित अतिथिगण

डॉ. चिन्मय जी एवं प्रो. मिंदोगस द्वारा शिक्षिका इवा का सम्मान, स्वामी सम्पूर्णानंद जी से चर्चा, श्री रोहित साहू को साहित्य भेंट

प्रोफेसर मिंदोगस

विनियस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मिंदोगस क्वेत्कॉस्कस, गिना क्वालिओनियते होल्वोत-एक्सेल होल्वोत दिनांक 29 मई 2024 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रवास पर आए। अपने तीन दिवसीय प्रवास में उन्होंने बाल्टिक संस्कृति और अध्ययन केंद्र सहित परिसर में गौशाला, स्वावलम्बन केन्द्र आदि सभी प्रमुख केन्द्रों का बड़ी जिज्ञासा और उत्साह के साथ अध्ययन किया। उन्होंने लिथुआनियाई भाषा और बहुभाषावाद पर बड़ा विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान भी दिया।

प्रोफेसर मिंदोगस का यह प्रवास लिथुआनियाई भाषा के वर्ष 2023-24 के छात्रों के लिए विदाई समारोह के निमित्त हुआ। इस समारोह में छात्रों ने लिथुआनियाई गीत प्रस्तुत किया। प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने लिथुआनियाई भाषा की शिक्षिका इवा एन्सेविसिटे की सेवाओं की सराहना करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया।

स्वामी सम्पूर्णानंद जी

दिनांक 29 मई 2024 को स्वामी सम्पूर्णानंद जी देव संस्कृति विश्वविद्यालय पधारे। माननीय प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उनका आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया। उनके साथ धर्म, अध्यात्म, समाज और राष्ट्र के अनेक विषयों पर चर्चा हुई, उन्हें पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना और उसके प्रभाव की जानकारी दी गई।

स्वामी सम्पूर्णानंद जी ने प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में पूजा की। इस अवसर पर पूरे मंदिर परिसर का वातावरण अत्यंत दिव्य और ऊर्जावान प्रतीत होता रहा।

श्री रोहित साहू : छत्तीसगढ़ विधान सभा के सम्मानित सदस्य श्री रोहित साहू देव संस्कृति विश्वविद्यालय में पधारे। माननीय प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने उनका तथा उनके साथियों का भावभरा स्वागत किया। युग चेतना के विस्तार के साथ प्रदेश में मानवीय उत्कर्ष, स्वावलम्बन एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास-विस्तार की व्यावहारिक योजनाओं पर बड़ी महत्त्वपूर्ण चर्चाएँ हुईं।

गायत्री माता का सच्चा भोजन स्वाध्याय ही है

बुद्धि की देवी गायत्री के प्रत्येक उपासक के लिए स्वाध्याय भी उतना ही आवश्यक धर्म कृत्य है, जितना जप, ध्यान, पाठ आदि। बिना स्वाध्याय के, बिना ज्ञान की उपासना के बुद्धि पवित्र नहीं हो सकती, मानसिक मलीनता दूर नहीं हो सकती और इस सफाई के बिना माता का सच्चा प्रकाश कोई भी उपासक अपने अंत:करण में अनुभव नहीं कर सकता। जिसे स्वाध्याय से प्रेम नहीं, उसे गायत्री उपासना से प्रेम है, यह नहीं माना जा सकता। बुद्धि की देवी गायत्री का सच्चा भोजन स्वाध्याय ही है। ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं। इसलिए गायत्री उपासना के साथ ज्ञान की उपासना भी अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। – पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

उत्तराखंड में पर्यटन और ग्रामीण स्थायित्व के लिए उद्यमशीलता के अवसरों की खोज

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पर्यटन विभाग और संस्थागत नवाचार परामर्श द्वारा देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके मुख्य अतिथि गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी के ग्रुप सीईओ डॉक्टर तुषार पांचाल थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सुंदरता की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने इनके माध्यम से स्थायी पर्यटन संबंधी उद्यमों के विकास की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की। डॉ. पांचाल ने पर्यावरण की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश आकर्षित करने और रोजगार के अवसर पैदा करने पर बल दिया तथा इन संभावनाओं का एक प्रारूप भी प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी में भाग लेने वाले अतिथि, अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी

सत्र का संचालन डॉ. ज्वलंत भावसार ने किया, डॉ. अरुणेश पराशर ने स्थिरता और उद्यमशीलता के बीच के संबंध को रेखांकित करते हुए विषयवस्तु की जानकारी दी। डॉ. आर.के. गुप्ता ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। संगोष्ठी का समापन डॉ. उमाकांत इंदौलिया द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

श्रम की पूजा करो। वह ऐसा प्रभु है जो चतुर्मुख ब्रह्मा और चतुर्भुज विष्णु से भी बढ़कर शक्तिशाली है। उसकी पूजा करने वाला त्रिकाल में भी निराश नहीं होता। – विनोबा

बुद्ध पूर्णिमा : गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना के वैश्विक अभियान को मिली शानदार सफलता

शान्तिकुञ्ज ने हरिद्वार नगर के 500 घरों में सम्पन्न कराए गायत्री यज्ञ

इस वर्ष बुद्ध पूर्णिमा-23 मई 2024 के दिन अखण्ड दीप की स्थापना और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-सन् 2026 के विशेष उत्साह के साथ पूरे देश में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान सम्पन्न हुआ। विगत कई वर्षों की भाँति इस वर्ष भी पूरे देश में 24 लाख घरों में यज्ञ सम्पन्न कराने का लक्ष्य रखा गया था। प्रत्येक जिले में कार्यकर्त्ताओं ने प्रशंसनीय सक्रियता अपनाई और अपने-अपने जिले के हजारों घरों में यज्ञ कराने में सफलता पाई।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ को नवयुग सृजन अभियान का अत्यंत महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक पुरुषार्थ बताया। उन्होंने कहा कि यज्ञ विश्व की आत्मा है, धुरी है। सारे संसार का संचालन यज्ञभाव से हो रहा है। एक मनुष्य ही है जो दुर्बुद्धि के कुचक्र में फँसकर यज्ञभाव से हटता, स्वार्थी जीवन जीता और विश्वमानव के लिए तमाम संकट खड़े करता दिखाई देता है। हमारा यज्ञ अभियान जनमानस को सही दिशा में प्रेरित कर विश्व में सुख, शान्ति, समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेगा।

शान्तिकुञ्ज परिवार ने हरिद्वार नगर में लगभग 500 घरों में यज्ञ सम्पन्न कराए। इसके अलावा जिले की विभिन्न शाखाओं द्वारा ऋषिकेश में भी बड़ी संख्या में घरों में यज्ञ हुए। शान्तिकुञ्ज ने लगभग 15 दिन के

बुद्ध पूर्णिमा के दिन घर-घर यज्ञ कराने शान्तिकुञ्ज से निकली टोलियाँ

जनसंपर्क अभियान में घर-घर जाकर पंजीयन किया। शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों के अलावा गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों की टोलियाँ भी यज्ञ कराने घर-घर गईं और यजमानों पर गहरी छाप छोड़ी। शान्तिकुञ्ज से ही समस्त यज्ञ सामग्री उपलब्ध कराई गई थी। यह देव परिवार निर्माण का विराट अभियान

> **विश्व में शान्ति, समृद्धि, प्रगति का मार्ग प्रशस्त करेगा गायत्री परिवार का यज्ञ अभियान**
>
> **- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी**

था, जिसके अंतर्गत हर घर में देवस्थापना कराई गई, यज्ञ में भाग ले रहे प्रत्येक व्यक्ति को नियमित गायत्री उपासना और नशामुक्ति के संकल्प कराए गए, उन्हें पत्रिकाओं के सदस्य बनाए गए।

शान्तिकुञ्ज से विश्वव्यापी गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान का संचालन किया गया।

ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका, फीजी, न्यूजीलैण्ड, यूरोप के सभी देश के अलावा विश्व के अनेक देशों में भी गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का राष्ट्रीय प्रावीण्य छात्र प्रतिभा परिष्कार शिविर

गुजरात के दिव्यांग बच्चे भी सम्मानित हुए

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में दिनांक 21 और 22 मई 2024 को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का राष्ट्रीय प्रावीण्य छात्र प्रतिभा परिष्कार शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर की मुख्य अतिथि गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज की शिक्षण समिति की प्रमुख शेफाली पण्ड्या जी ने इस अवसर पर वरीयता प्राप्त छात्र-छात्राओं को शील्ड, प्रमाण पत्र, निर्धारित पुरस्कार राशि आदि प्रदान कर सम्मानित किया।

श्रीमती शेफाली पण्ड्या अग्रणी रहे दिव्यांग बच्चों को सम्मानित करते हुए

प्रथम पुरस्कार अरवल्ली जिले में मोडासा के मूक-बधिर रुद्र एवं प्रभुदास गाँधी, सूरत के दृष्टि बाधित करण दिगंबरराय भगत, दिव्यांग साक्षी सुनील सिंह, द्वितीय पुरस्कार वलसाड के नरेश, सूरत की ध्रुवी, जांझवेरा सूरत की मैत्री तथा तृतीय पुरस्कार सूरत के नील गाँधी, भावनगर के हसमुख, सोजित्रा सूरत के विपिन शर्मा को प्राप्त हुआ। समस्त विजेताओं को श्रद्धेया शैल जीजी ने भी आशीर्वाद प्रदान किया।

इस शिविर में विभिन्न कक्षाओं में राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी रहे कुल 70 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इसमें आदरणीया शेफाली जीजी ने गुजरात प्रान्त में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की विशेष श्रेणी में भाग लेकर अग्रणी रहे 9 दिव्यांग विद्यार्थियों को भी पुरस्कार प्रदान किया।

सूरत, गुजरात की श्रीमती हेमांगिनीबेन देसाई दिव्यांग बच्चों के उत्थान के लिए अथक परिश्रम कर रही हैं। वे पूरे गुजरात कई जिलों के अनेक विद्यालयों में दिव्यांग बच्चों को गायत्री उपासना, साधना, स्वाध्याय के विविध उपायों से जोड़ रही हैं। इसी क्रम में वे दिव्यांग बच्चों के लिए भी भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन कराती हैं, जिनमें दृष्टिबाधित, मंदबुद्धि, मूक एवं तरह-तरह के दिव्यांग बच्चे शामिल होते हैं। हेमांगिनीबेन देसाई सन् 2010 से यह कार्यक्रम चला रही हैं। प्रदेश के 6000 विद्यार्थियों को वे परीक्षा में शामिल करा चुकी हैं।

गायत्री विद्यापीठ शिक्षण समिति की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या शिविर को संबोधित करते हुए

शान्तिकुञ्ज ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर निकाली जन जागरण रैली

विश्व तंबाकू निषेध दिवस-31 मई को शान्तिकुञ्ज परिवार ने जन जागरण रैली का आयोजन किया। इस रैली में शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता सहित विभिन्न साधना व प्रशिक्षण शिविरों में आये प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस वर्ष विश्व तंबाकू निषेध दिवस की थीम बच्चों को तंबाकू उद्योग के हस्तक्षेप से बचाना है। रैली में 'तंबाकू भगाओ-देश बचाओ', 'पान-बीड़ी और शराब, स्वास्थ्य को करते खराब', 'नशा नाश की जड़ है भाई...' जैसे नारे गूँजते रहे।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर देशवासियों से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को खोखला करने वाली इस बुरी लत को पूरी तरह से छोड़ देने की अपील की। उन्होंने कहा कि किसी भी रूप में तंबाकू के अधिक

> **युवाओं को नशे से बचाना देश के समक्ष एक बड़ी चुनौती है।**
>
> - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

सेवन से क्षय रोग, हृदय रोग, उदर रोग, नेत्रों की खराबी सहित अनेक बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। पैरों की नसों से लेकर मस्तिष्क तक को भारी नुकसान पहुँचाता है। अनेक शैक्षणिक संस्थानों में हुई रिचर्स से पता चला है कि भयानक कैंसर रोग का एक बड़ा कारण धूम्रपान ही है।

श्रद्धेय ने कहा कि आज युवाओं को तंबाकू के सेवन से बचाना है, एक बड़ी चुनौती है। युवा स्वस्थ, सशक्त रहेगा, तभी राष्ट्र समृद्ध और सशक्त बनेगा।

शान्तिकुञ्ज की नशामुक्ति रैली का गुरुस्मारकों पर प्रार्थना के साथ हुआ समापन

श्रद्धेया शैल जीजी ने कहा कि दुर्व्यसन मनुष्य के वास्तविक प्राणघातक शत्रु हैं। तंबाकू, चरस, भाँग, अफीम, शराब आदि नशीली चीजें अत्यंत हानिकारक हैं। भारत को भूटान जैसे अनेक देशों से प्रेरणा लेनी चाहिए, जहाँ तंबाकू का प्रयोग निषिद्ध है।

श्रद्धेय द्वय ने 'आओ बनाएँ व्यसनमुक्त भारत अभियान' को सफल बनाने के लिए गायत्री परिवार के युवाओं द्वारा पूरे देश में चलाए जा रहे कार्यक्रमों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हमें अपने चिंतन और चरित्र से देश के युवाओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना है।

परमात्मा न तो दूर है और न कठिनाई से प्राप्त होता है। वह अपनी देह के भीतर ही है और आत्मानन्द के रूप में प्रत्यक्ष है।

- योगवासिष्ठ 3/6/3

सुख के पीछे मत दौड़ो। वह मृगतृष्णा की तरह है, जो हाथ न आ सकेगा। केवल कर्त्तव्य को पकड़ो। जो उचित है उसे करना पर्याप्त समझो। सन्तोष के रूप में सच्चा सुख अनायास ही मिल जाएगा। - अरस्तु

दो दिवसीय शिक्षक गरिमा शिविर

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में 30 एवं 31 मई को दो दिवसीय शिक्षक गरिमा शिविर का आयोजन हुआ। इसमें भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से जुड़े मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र राज्य के शिक्षक व शिक्षिकाएँ शामिल रहे।

शिविर के समापन समारोह को संबोधित करते हुए शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री शिवप्रसाद मिश्र जी ने कहा कि प्राचीनकाल में जिस तरह गुरुओं ने अपने आचरण व व्यवहार से शिष्यों को ज्ञान और संस्कार दिया था, उसी परम्परा को पुनर्जीवित करने का आह्वान युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने किया है। वर्तमान समय में भी शिक्षकों को अपने उत्कृष्ट आचरण से विद्यार्थियों को गढ़ने की आवश्यकता है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी ने अध्यापकों को युग निर्माता बताया।

शिविर के समापन अवसर पर मध्य प्रदेश के सीमा नामदेव, चंद्रमोहन गौड़, ज्योति दीक्षित, राजेश कुमार त्रिवेदी, रविशंकर पारखे तथा महाराष्ट्र के रजनी लुंगसे, हनुमंत गौर गोरखनाथ शिंदे, प्रसन्न बुलढाणा, नीता संतोष, गणेश पिंडरी आदि को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। दो दिवसीय शिविर में कुल दस सत्र हुए। इन्हें श्री वीरेन्द्र तिवारी, श्री योगेन्द्र गिरि, श्री रामयश तिवारी, श्रीमती शशिकला साहू, श्री अभय सक्सेना आदि ने भी संबोधित किया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 12.06.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26